निजी व सरकारी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की पाठ्येत्तर प्रवृत्तियों के प्रति अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन

श्रीमती सरिता शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

नीलम कुमारी
बी.एड.एम.एड. छात्रा,
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

सारांश

शिक्षा के लक्ष्यों की प्राप्ति की प्रक्रिया में पाठ्यक्रम के माध्यम से ही विद्यालय के सभी कार्यकलाप नियन्त्रित होते है क्योंकि यही वह केन्द्र बिन्दु है, जिसके लिए विद्यालय विभिन्न प्रवृत्तियाँ आयोजित करता है। विद्यालय पाठ्यक्रम के उद्देश्यों के अनुरूप ही निश्चित व्यवस्था के अन्तर्गत शिक्षकों के मार्गदर्शन में अध्यापन अधिगम संस्थितियाँ सृजित की जाती है। पाठ्यक्रम के अन्तर्गत मुख्य रूप से दो प्रकार की प्रवृत्तियाँ आयोजित होती है : (1) पाठ्य क्रियाएँ, (2) पाठ्येत्तर क्रियाएँ। इन्हीं क्रियाओं के माध्यम से समाज अपनी संस्कृति के संचित ज्ञान और अनुभवों का निचोड़ अपने विशिष्ट अभिकरण 'विद्यालय' के माध्यम से भावी पीढ़ी को हस्तांतरित करता है।

की वर्ड : *पाठ्येत्तर, प्रवृत्तियाँ, अभिवृत्ति*

१.प्रस्तावना

प्रारम्भ में परीक्षा बोर्ड अथवा विश्वविद्यालय द्वारा निर्दिष्ट प्रवृत्तियों को पाठ्य प्रवृत्तियाँ कहा जाता था तथा उनको परीक्षा में सम्मिलित किया जाता था। अन्य वे प्रवृत्तियाँ थी, जिनके द्वारा शिक्षार्थी का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास होता था, अतः विद्यालय उनका आयोजन तो कराता था, परन्तु उनकी उपलब्धियों का प्रभाव परीक्षा पर नहीं पड़ता था। उन्हें पाठ्येत्तर प्रवृत्तियाँ कहा जाता था। अब इन प्रवृत्तियों को पाठ्येत्तर में से कोई भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। दोनों एक दूसरे की पूरक है।

अतः पाठ्येत्तर प्रवृत्तियों से अभिप्राय उन क्रियाओं से है जिनके सहयोग से शिक्षण कार्य एवं विद्यालय का वातावरण सजीव हो उठता है। ये प्रवृत्तियाँ बालक की मूल प्रवृत्तियों में शोधन कर उनका सम्पूर्ण विकास करती है।

पाठ्येत्तर प्रवृत्तियों की परिभाषा देना अत्यन्त ही कठिन है। कारण इन प्रवृत्तियों को अनेक भिन्न–भिन्न नामों से पुकारा जाता है यथा पाठ्येत्तर प्रवृत्तियाँ (Extra Curricular Activities), पाठ्येत्तर क्रियाएँ (Co-curricular Activities) उपर्युक्त विविधता तभी सार्थक होती है जब पाठ्यक्रम का अर्थ संकुचित रूप से लिया जाये, परन्तु आज जब पाठ्यक्रम के अन्तर्गत वे सभी कार्यकलाप या प्रवृत्तिया जिनसे विद्यार्थियों को विविध प्रकार के शैक्षिक अनुभव मिलते है, वे चाहे विद्यालय के द्वारा कक्षा के अन्तर्गत दिए जाए अथवा कक्षा के बाहर, पाठ्क्रम के अन्तर्गत आ जाते है।

२.समस्या औचित्य

पाठ्येत्तर क्रियाओं का उद्देश्य सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास है। अतः यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि प्रत्येक विद्यार्थी इन गतिविधियों में प्रतिभागी बने, इसके लिये उन्हें निरन्तर प्रोत्साहित करने की आवश्यकता होती है तथा उन्हें भाग लेने की पहल करने के लिये प्रेरित किया जाना चाहिए जिससे वह भाग लेने के लिये सहर्ष तैयार हो, अपनी प्रतिभा को उभार सके। अनेक शोध कार्य यह बताते है कि आज भी समग्र विश्व में विद्यार्थियों का एक बहुत छोटा अंश, इन प्रवृत्तियों में भाग लेता है। अधिकांश इन प्रवृत्तियों में भाग न लेना ही उचित समझते है। विद्यार्थी इन क्रियाओं में भाग क्यों नहीं लेते हैं, इन क्रियाओं के बारे में उनकी क्या अभिवृत्ति है, यह शोध का विषय है। इस समस्या के समाधान हेतु ही प्रस्तुत शोध कार्य किया जायेगा। आज सम्पूर्ण विश्व के सामने तथा विशेष रूप से हमारे देश में विविध सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक व आर्थिक मूल्यों में क्रान्ति हो रही है, अतः बालक इन सामाजिक, राष्ट्रीय तथा अर्न्तराष्ट्रीय आकांक्षाओं के अनुरूप व्यक्तित्व सम्पन्न बन सके, यही शिक्षा का उद्देश्य है। लोकतंत्रीय समाज की यह प्रबल माँग है कि उसके युवकों को सामाजिक अनुभवों की प्रयोगशाला प्राप्त हो, जिसमें वे कक्षा–कक्ष में पढ़ाए गए लोकतंत्रीय सिद्धान्तों को प्रयोग में ला सकें। पाठ्येत्तर क्रियाओं में विद्यार्थी अधिक से अधिक भाग नहीं लेते है क्योंकि विद्यालय में उन्हें प्रोत्साहित भी नहीं किया जाता है। युवकों की क्षमता में विश्वास का अभाव भी एक कारण है क्योंकि उनकी सहभागिता के बिना गतिविधियों को सफलता से संगठित नहीं किया जा सकता है। अतः इसीलिए इन प्रवृत्तियों के सम्बन्ध में विद्यार्थियों की अभिवृत्ति जानना जरूरी है।

३.सम्बन्धित साहित्य

अशोक कुमार गोदारा ''माध्यमिक विद्यालयों में पाठ्येत्तर क्रियाओं में शिक्षकों की भूमिका एक अध्ययन 2016–17''. इन्होंने निष्कर्ष दिया कि माध्यमिक विद्यालयों में राजकीय व गैर राजकीय पुरूष शिक्षकों का पाठ्येत्तर क्रियाओं के संचालन में भूमिका में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। माध्यमिक विद्यालयों में राजकीय पुरूष व महिला शिक्षकों का पाठ्येत्तर क्रियाओं के संचालन में लिंग भेद का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है। माध्यमिक विद्यालयों में राजकीय महिला व गैर राजकीय पुरूष शिक्षकों का पाठ्येत्तर क्रियाओं के संचालन में इनके बीच कोई सार्थक संबंध नहीं पाया गया।

सिंघवी बजरंगमल "Asurvey of co-curricular activities of the student of class X of the higher secondary school of Jodhpur and their effect on their socibility 1970". mसिंघवी ने पाया कि छात्रों को सामाजिक गतिशीलता और कार्यक्रमों में उनके प्रतिभागीत्व के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया किन्तु विद्यालयों में शैक्षिक कार्य और सह शैक्षिक कार्यों के आयोजनों के सम्बन्ध समन्वय की कोई स्थिति नहीं थी।

आचार्य सुभाष ''माध्यमिक स्तर के छात्रों में स्काउटिंग व गाइडिंग आन्दोलन के अन्तर्गत साहस, सहयोग और सहिष्णुता के उद्देश्य व पोषण हेतु आयोज्य शैक्षिक परिस्थितियों की खोज व उनके प्रतिफल का स्वरूप 1992'' आचार्य ने स्पष्ट किया की बालचर प्रवृत्ति के संचालन में उपलब्धि देशकाल की स्थिति पर निर्भर करती है।

चवन एच.डी. ''जूनियर स्तर के कबड्डी खिलाड़ियों पर विभिन्न कसरतों के प्रभाव का अध्ययन 2003'' इन्होंने पाया कि कुछ चुके हुए खिलाड़ियों की खेल क्षमता को प्लेयों–मैट्रिक एक्सरसाइज का प्रशिक्षण देने से बढ़ाया जा सकता है। मनोभौतिक क्रियाएँ कबड्डी खिलाड़ियों के कौशल को बढ़ाती है।

शर्मा डी.वी.''विश्वविद्यालय प्रतिनिधित्व करने वाले खिलाड़ियों तथा न खेलने वालों का मनो–सामाजिक घटकों पर अध्ययन 1984'' वाले तथा विश्वविद्यालयों का प्रतिनिधित्व करने वालों के मध्य तत्परता का अन्तर होता है, किन्तु बुद्धि के चर में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

४.साहित्य विवेचना

प्रस्तुत शोध में निजी व सरकारी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की पाठ्येत्तर प्रवृत्तियों के प्रति अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इससे सम्बन्धित अध्ययन निम्न है – अशोक कुमार गोदारा, सिंघवी बजरंगमल, आचार्य सुभाष, चवन एच.डी.,शर्मा डी.वी. अतः उपरोक्त शोध अध्ययनों में पाठ्येत्तर प्रवृति से सम्बन्धित अनेक शोध कार्य किये गये है। उन्होंने निजी व सरकारी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की पाठ्येत्तर प्रवृत्तियों के प्रति अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन किया है। लेकिन निजी व सरकारी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की पाठ्येत्तर प्रवृत्तियों के प्रति अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन कार्य अभी नहीं हुआ है। इसलिए शोधकर्त्री ने इस समस्या का चयन किया है।

५.समस्या कथन

''निजी व सरकारी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की पाठ्येत्तर प्रवृत्तियों के प्रति अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन''

६.प्रस्तुत शोध के उद्देश्य

निजी व सरकारी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की साहित्यिक क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

७.प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श चयन

शोधकर्त्ता ने सरल यादृच्छिक विधि का प्रयोग करके न्यादर्श का चुनाव किया है। सरल यादृच्छिक विधि का प्रतिचयन लॉटरी विधि, पासा उछालकर, सिक्का उछालकर या यादृच्छिक टेबल द्वारा किया जाता है।

८.अध्ययन प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अनुसंधान में शोधकर्त्ता द्वारा पाठ्येत्तर प्रवृत्तियों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिये स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है।

"निजी व सरकारी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की साहित्यक क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन"

क्षेत्र	छात्र संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मान	सार्थकता स्तर
सरकारी विद्यालय के छात्र	100	32.59	3.62	0.99	0.01
निजी विद्यालय के छात्र	100	32.00	3.91		0.05

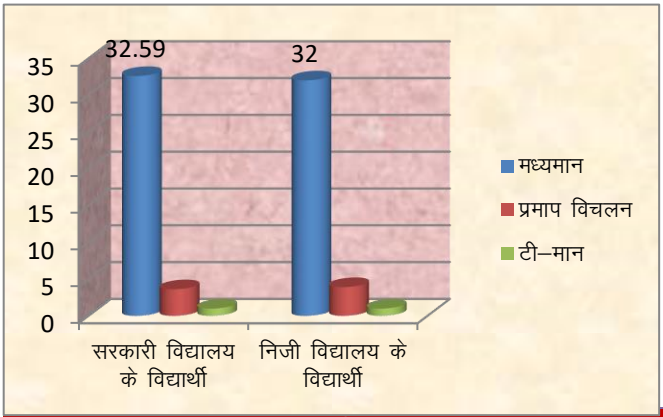

९.परिणाम

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की साहित्यक क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति के अंको का मध्यमान 32.59 तथा प्रमाप विचलन 3.62 है। जबकि निजी विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की साहित्यिक क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति के अंको का मध्यमान 32.00 तथा

प्रमाप विचलन 3.91 है। इन दोनों का टी–मान 0.99 है। सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के मध्यमान से अधिक है। मध्यमान अधिक होने के कारण सरकारी विद्यालय विद्यार्थियों की साहित्यिक क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति के अंको के मध्यमान का अंतर 0.59 है।

मध्यमानों के अंतर की सार्थकता को ज्ञात करने हेतु टी मान का सहारा लिया जाता है। इन दोंनो प्राप्त टी मान 0.99 है जो कि 0.05 स्तर के तालिका मूल्य 1.98 से कम है। अतः यह परिकल्पना 01 स्तर पर भी स्वीकृत होती है। अर्थात् निजी व सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की साहित्यिक क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

१०.निष्कर्ष

सारणी संख्या 4.1 में माध्यमिक स्तर के निजी व सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में की गई है जिसमें गणना द्वारा प्राप्त टी – मान 0.99 है। अतः दोंनों की सार्थकता स्तर यथा 0.05 व 0.01 पर सार्थक नहीं है। अर्थात् निजी व सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की साहित्यिक क्रियाओं के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः निर्मित परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१. पाठक, पी.डी. (2007). ''शिक्षा मनोविज्ञान'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा पब्लिकेशन
२. शर्मा, आर.ए. (1994).''शिक्षण अधिगमन मे नवीन प्रवर्तन'' आर.लाल बुल डिपों, मेरठ,
३. श्री वास्तव, रामजी एवं अन्य (2005).''आधुनिक विकासात्मक मनोविज्ञान'' दिल्ली प्रकाशन
४. शर्मा, आर.ए. (2004).''शैक्षिण अनुसंधान'' सूर्या पब्लिकेशन्स मेरठ
५. सुखिया, एस.पी. महरोत्रा पी.वी.(2008).''शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व'' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा
६. स्रीन, एण्ड सरीन(2007–08).''शैक्षिक अनुसंधान की विधियॉ'' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा पब्लिकेशन
७. बुच, एन.बी. (1983).''थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन'' नेशनल काउन्सिल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग, न्यू देहली
८. http:/www-ceeindia-org> 7 December] 2004
९. http:/www-earthcharter-org > 5 December] 2004
१०. http:/www-esdtoolkit-org> 24 November] 2004
११. http:/www-road-unep-org > 7 December] 2004
१२. http:/www-unesco-org > 8 December] 2004
१३. WWW-CSCT&PROJECT-ORG